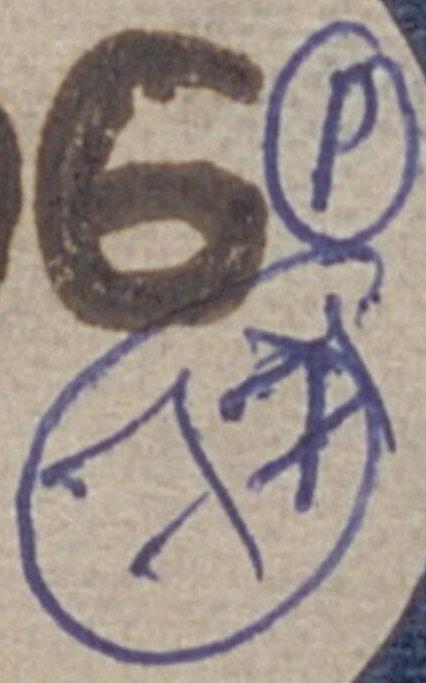


406

H



MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार
Government of India

नई दिल्ली
New Delhi

1227
10/21

आह्वानांक Call No. _____

अवाप्ति सं० Acc. No. **406**

15

✓
18/11

18/11

॥ बन्दे मातरम् ॥

महात्मा गांधी का सच्चा उपदेश

गांधी की धूम

अथवा

स्वदेशी भंडा



संग्रहकर्ता व प्रकाशक—

महाशय प्यारेलाल वैश्य वारा खुर्द निवासी

पता—मौजा पुरायां पो० तिलहर

जि० शाहजहापुर

उर्दू हिन्दी का सर्वाधिकार सुरक्षित है।

शिघ्रल प्रिटिङ्ग वर्क्स में छपा

मूल्य -)॥



891.431
NO 1976

ईश्वर प्रार्थना

शरण में तुम्हारी हम आये प्रभू जी
गुज़ारिस ये तुम पास लाये प्रभू जी
जो हैं कष्ट हमको मिटा दीजै सारे
तुम्ही से हैं ये लौ लगाये प्रभू जी
ये है हिन्द अब तो गुलामी से जकड़ा
उबारो क्यों देरी लगाये प्रभू जी
पड़ी नाव मझ में लगादो किनारे
बड़ी आस तुमसे लगाये प्रभू जी
ये है लाज भारत की कर में तुम्हारे
खड़े "प्यारे" सर को नवाए प्रभू जी

हमारा चर्खा

चला दो चर्खा हर एक घर में,
तब ये चर्ख तुम हिला सकोगे ।

कन्धा तभी तुम सिलसिला सकोगे,
उन्हें कबड्डी खिला सकोगे ॥



हमारे चरखें में ऐसा फन है,
 जो आज कलकी मशीन गन है ।
 वह मैनचेष्टर व लंका शायर,
 का जीत जिससे किला सकेगे ॥

रुई न भारत की हो खाना,
 बने स्वदेशी का ताना बाना ।
 इसी तगे से विदेशी बाणज,
 को आप फांसी दिला सकेगे ॥

न पट विदेशी का लो सहारा,
 शरीर चाहें रहे उधरा ।
 बचै बाहत्तर कड़ोर रुपया,
 तब अपने बच्चे जिला सकेगे ॥

मिला लो भाई गले लगा के,
 स्वदेशी का तुम सबक पढ़ाके ।
 विदेशी चीजों को दो हटाके,
 तो चैन बंसी बजा सकेगे ॥

बालिन्टियर बनो

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना
 प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है बनाना
 मत बुज़दिली को हरगिज़ तुम पास दो फटकने
 आखिर तो दम अदम को होगा कभी खाना
 स्वतन्त्र देवों के अब जल्दी बनो उपासक
 निज पूर्वजों का तुम को गर नाम है चलाना
 परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हो
 उनको हगम है अब भारत का आवदाना
 द्रढ़ सत्य पर रहे धारण करो ऐ अहिंसां
 आकर के जोश में तुम हुल्लड़ मती मचाना
 माता की कोख नाहक करते हो तुम कलङ्कित
 बालिन्टियर बनो तुम अब छोड़ दो बहाना
 जब देश भर के नेता सब जेल में पड़े हैं
 तो फिर तुम्हें भी इससे लाज़िम है जेल जाना
 दिल में भिन्नक न लाओ आगे कदम बढ़ाओ
 है स्वर्ग से भी बढ़कर इस वक्त जेलखाना

“प्रकाश” समय यही है कुछ करलो देश सेवा
दो दिन की ज़िन्दगी है इसका नहीं ठिकाना

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें ।

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाके दिखाना होगा ।
जो हम गरीबों को है मुसीबत, अब उनसे हमको छुड़ना होगा ॥
नशीली चीज़ें शराब गांजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरती ।
मिटाने इसकी । खरोद विक्री, दुकाने सारी उठाना होगा ॥
हमारे सिक्के की दरको साहब, घटा बढ़ा कर जो लूट करते ।
तो एक शिल्लिङ्ग चारपेन्स का, कर भाव तुमको दिखाना होगा ॥
ज़मीन का भी लगान कम हो, किसान जिससे न दुख पायें ।
विभाग इसका ॥ हमारी कौंसिल, के हाथ में दिलाना होगा ॥
नमक पै कर जो लगा रखा है, उठालो उसको करो न देरी ।
है फौज पलटन का खर्च जो कुछ, उसे भी आधा घटाना होगा ॥
बड़े अफसरों की तनख्वा आधे, से और भी कुछ करो कम साहब ।
घटी हुई आमद से ही तुमको, ये खर्च अपना चलाना होगा ॥
स्वदेशी कपड़े की उन्नती के, लिये विदेशी वसन के ऊपर ।
लगाओ। उसपे कर चौगुना :तुम, नियम ये ऐसा बनाना होगा ॥
[जहाज व्यापारिक जो हमारे, चलते समुन्दर में जो ऐ साहब ।
[लगाया उनपै जो कर है तुमने, वह जल्द तुमको हटाना होगा ॥
[जिन्हों को हत्या के जुर्म से मिल, चुकी सज़ा उनको छोड़ करके ।
जो राजनैतिक हमारे कैदी, हैं उनकी बन्दी छुड़ाना होगा ॥
जो राजनीतिक के मामले हैं, चले आरहे सदा से साहब ।
उसी मुताबिक एक सो चौबिस, दफाय रही कराना होगा ॥

विभाग, खुफ़िया पुलिस का तोड़ो, या उसपे अधिकार हो हमारा ।
 व आत्मरक्षा के हेतु हमको, भी चेम्पियन बन बंधाना होगा ॥
 लार्ड इरवन से कहें "प्रकाशक,, ये शर्तें" गांधी की पूरी करदो ।
 नहीं तो अपनी प्रजा के क़दमों, में शीश तुमको झुकाना होगा ॥
 हमारे लीडर विदेशों को जो, पठाये जबरन गये हैं फ़ौरन ।
 स्वराज्य होने का हुक्म उनके, लिये भी तुमको सुनाना होगा ॥

भारत की गर्जना

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना
 आज़ाद होगा २ आता है वह ज़माना
 खूं खौलने लगा है हिन्दुस्तानियों का
 कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द, जुल्म ढाना
 क़ौमी तिरंगे झंडे पर जां निसार अपनी
 हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं ये तराना
 अब भेड़ बकरी बनकर हरगिज़ न हम रहेंगे
 इस परत हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना
 परवाह अब किसे है ये जेल औ दमन की
 एक खेल हो रहा है फांसी पे भूल जाना
 भारत वतन हमारा है भारत के हम हैं बच्चे
 माता के वास्ते मंजूर है सर कटाना

भारत सुधार गारी

इन गोरन की करतूत सुनाऊं तोय सुन
सजनी ॥ टेक ॥ हरे २ ॥ भारत में ये जिस
दम आये खूब दिखाया प्यार । पात २ कर
फिर सब लूटा दई भीतरी मार । टूट गई
कनी २ ॥ पहिले एक कंपनी खोली बहुत मचाई
धूम । कोरी और जुलाहे यहां के फांस लिये
मासूम ॥ पछाड़े सेठ धनी ॥ इन गोरन०
अच्छे २ कपड़े यहां पर होते जो तैयार ।
उसे कंपनी जबरन लेती अरु करती बेज़ार ॥
घरों में दे अगनी ॥ इन गोरन० फांसैं
नाखूनों ठोंकी बांध लगाई मार । उगली काट
अलग करते थे नित नये अत्याचर ॥ करी
अति कटा छनी० ॥ इन गोरन० ॥ करघेचख्खे
तोड़ ताड़ कर किया हिन्द बेकार । भारत में
या विध फैलाया यूरुप का व्यौपार ॥ बिगाड़ी
बात बनी ॥ इन गोरन० ॥ अबलाओं के

अंग दीखते वस्त्र पहिन बारीक । मालामाल
 विलायत हो गई भारत मांगे भीख ॥ सकल
 सम्पत्ति छीनी ॥ इन० वस्त्र विदेशी अब मति
 पहिनो रखो देशकीलाज । त्यागो फेंको आग लगादो
 तब ही होय स्वराज ॥ सुनो भारत भगनी ॥
 इन गोरन की करतूत

स्वदेशी गान

(इस कविता पर श्री बेनीमाधव खन्ना ने ४१) पुरस्कार
 दिया था)

जियें तो स्वदेशी बदन पर बसन हो,
 मरें अगर तो स्वदेशी कफन हो ॥ टेक ॥
 पराया सहारा है अपमान होना,
 जरूरी है निज शान का ध्यान होना
 है वाजिब स्वदेशी पै कुर्बान होना,
 इसी से है सम्भव समुत्थान होना
 लगन में स्वदेशी की हर मर्दोज़न हो । मरें भी अगर० ॥ १ ॥
 निछावर स्वदेशी पै कर मालोज़र दो,
 स्वदेशी से भारत का भंडार भरदो ।
 रहें चित्र से— वह तकाचाँध करदो,
 दिखा पूवजों के लहू का असर दो ।
 स्वदेशी हो सजधज स्वदेशी चलन हो ॥ मरें भी अगर० ॥ २ ॥

चलो इस तरह अपना चर्खा चला दो
मनो सूत की ढेरियां तुम लगा दो ।
बुनो इतने कपड़े मिलों को छुका दो,
जमा दो स्वदेशी का सिक्का जमा दो ।

स्वदेशी हो गुल औ स्वदेशी चमन हो ॥ मरें भी अगर० ॥३॥

न अतलस न मखमल की हो चाह तुमको ।
कपट-सिन्धु की मिल गई थाह तुमको
न अब कर सकेंगे वे गुमराह तुमको,
किसी की रही कुछ न परवाह तुमको ।

फिदाये वतन अपना तन प्राण धन हो ॥ मरें भी अगर० ॥४॥

उठो कर्मवीरो तुम्हें कौन भय है,
स्वदेशी का संग्राम भी शांतिमय है ।
प्रथा पाप की पाप में आप लय हैं,
विजय है, विजय है, तुम्हारी विजय है ।

स्वदेशी हो पूजन स्वदेशी भजन हो । मरें अगर तो० ॥ ५ ॥

समर स्वत्व का वीर वर ठान दो तुम,
किसी के प्रलोभन में मत कान दो तुम ।
लुशी से स्वदेशी पै दे जान दो तुम,
बने जिस तरह मां को सम्मान दो तुम ।

स्वदेशी हो जीवन स्वदेशी मरन हो । मरें भी अगर तो० ॥ ६ ॥

बनो कर्मयोगी न तुम कर्म छोड़ो,
गुलामी की जञ्जीर चर्खे से तोड़ो ।
मुसीबत उठाओ मगर मुह न मोड़ो,
तपोबल से अन्याय का गर्व तोड़ो ।

स्वदेशी हो पोषण स्वदेशी मरण हो । मरें भी अगर तो० ॥ ७ ॥

तुम्हीं तो स्वदेशी के हो आज प्राता,
 तुम्हीं देश के भाग्य के हो विधाता ।
 तुम्हीं पर है सौ जां से कुर्वान माता,
 तुम्हें फिर न क्यों ध्येय का ध्यान आता ।

जो साधन स्वदेशी ही संकट शमन हो । मरें भी अगर तो ॥८॥

करो प्रण कि अज़ाद होकर रहेंगे,
 जहां में कि बरबाद होकर रहेंगे ।
 सितमगर ही या शाद होकर रहेंगे,
 कि हम शाहो आबाद होकर रहेंगे ।

स्वदेशी हो 'अख्तर' स्वदेशी कथन हो । मरें भी अगर तो ० ॥९॥

—श्री स्वामी नारायणनंद जी 'अख्तर'

भारत की पुकार

है देश प्यारा हमारा भारत, इसी पै तन मन
 को बार देंगे । रहेंगे या तो स्वतन्त्र हो कर,
 या कर नछावर हम प्राण देंगे ॥ हो चाहें जो
 कुछ भी हाल तन का, गुलाम बनकर न पर
 रहेंगे । वजह क्या जो कि हक हमारे, इसी
 तरह से दबे रहेंगे ॥ हमारे धन से हमारे घर
 पर, जो गैर आके मजे करेंगे । न होगा ऐसा

कभी भी हरगिज, कि इस क्रूर के हम दुख
 सहेंगे ॥ हकूक अपने जो जब मांगते हैं, तो
 डर दिखाते मशीन गन का ॥ ये याद रखें
 वह अपने दिल में, न इससे हरगिज हम डर
 सकेंगे ॥ चलायेंगे गर मशीन गन वह, इधर
 चलेगा हमारा चर्खा । इसी एक चर्खे से देखो
 नशा हम उनका उतार देंगे ॥ है उनके हकमें
 यही भलाई, हकूक सारे हमारे दे दें । कहें ये
 बाबू फिर इस जहां के, हम सारे भगड़े कर
 पार देंगे ॥

गज़ल दादरा (चर्खा)

टेक—गांधी बाबा ने भारत जगाव दिया है ।

हमें चरखे का मंतर बताया दिया है ॥

शेर—जब से घर-घर में ये चरखे का चलाना छूटा ।

बस उसी रोज से भारत का नसावा फूटा ।

आके परदेशियों ने खूब खसोटा लूटा ।

धर्म छूटा सभी इन्सान का पौरुष टूटा ।

आंखों से पट्टी हटाकर गुलामी की,

मार्ग पुराना दिखाय दिया है । गांधी ॥ १ ॥

शेर—कौनसा घर था जहाँ चरखे नहीं चलते थे ।

लाखों मन सूत इन्हीं चरखों से निकलते थे

महीन मोटे कपड़े हर तरह के बनते थे ।

शुद्ध मजबूत थे सुख से उन्हें पहिनते थे ।

विलायत से आके राज जमा के,

हाय गोरोंने वह सुख नसाय दिया है । गांधी०

शेर—व्याह शादी में था दहेज में चरखे का चलन ।

नारियां हिन्दू मुसलमान समझती थीं सगुन ।

नेम से नित्य वे चरखे को चलाती थीं पुन ।

सुख से भरपूर रहो उससे निकलती थी धुन ।

धर्म से हमने कैसे विमुख हो,

पापों में मन को लगाय दिया है । गांधी० ॥३॥

शेर—विदेशी सारियां करेप वो अद्ध मल मल ।

हिन्दू के लोग गिरे देख उन्हें मुंह के बल ।

नारियां लाज से धूँधट न लो उठाती है ।

पहन के उन को साफ नगी नजर आती है ।

डूब मरो तुम्हें लाज न आती,

पैसा वो इज्जत गंवाय दिया है । गांधी० ॥४॥

शेर—कुछ अभी गौर करो हिन्दू औ मुसलमानो;

तलाक दे दो इन्हें, अपनी दशा पहिचानो ।

चलाओ चरखा तजो शौक वह दिन आयेगा

स्वराज्य दौड़ कर कदमों में सिर नवायेगा

सूत के धागे में सारी है ताकत

“माधो” ने तुमको सुनाय दिया है ॥ गांधी बाबा० ५ ॥

राष्ट्रतपि जवाहरलाल

हुए पैदा भारत में गांधी जवाहर

करी मात भारत की कुत्ता उजागर
जिन्हों ने गुलामी की जंजीर तोड़ी

विद्रिष्ट कूट नीती की हंडी है फोड़ी
लिया नीति अहिंसा का कर में दुधारा

पड़े कूद संग्राम के बीच धारा
गुलामी से भारत जो जकड़ा हुआ था

गवर्मेन्ट के लोभ में जो फंसा था
उन्हें मंत्र चर्खे का ऐसा बताया

उदूँ के दिलों को है जिसने हिलाया
किया दूध का दूध पानी का पानी

पड़ी जेल में मात भारत भवानी
उसे दिलसे अज़ाद करने की ठानी

पड़े जिसमें आगे न सरुता उठानी
जो किसानों पे करते ज़िमीदार मरुती

विद्रिष्ट की हैं जिन पे कृपाएँ चमकती

उन्ही के लिए कर में ली नीति तख्ती

जिसे देख दिलमें है अग्नी धधकती
राज नितिक के पीछे मिटा अपनी हस्ती

पड़े जेल में दुख भोगें हैं सख्ती
अरे हिन्दू मुसलिम क्यों अब सो रहे हों

बढ़ाओ कदम देर क्यों कर रहे हो
करो मुल्क आज़ाद चर्खा चलाकर
उठो 'प्यारे' तुमभी हशर दो दिखाकर

खुदया कैसी मुसीबतों में ये हिंदवाले पड़े
हुये हैं । कदम २ पर हमारी खातिर सितम
के छाले पड़े हुए हैं ॥ जो आए महिमा
हमारे बन कर वह जुलम करने लगे हमीं पर,
ग़ज़ब तो ये है मकां से बाहर मकांन वाले पड़े
हुए हैं । सरों पै दुशमन खड़े हुए हैं गलों पै
खंज़र चला रहे हैं । दिलों में नस्तर चुभे हुए
हैं, जिगर में छाले पड़े हुए हैं । हजारों बच्चों

से बाप बिछड़े, वह तेरा किस्मत के होके
 टुकड़े, सुहागलों के सुहाग उजड़े, घरों में
 ताले पड़े हुए हैं। हवा जमाने की बिगड़ी
 नेयर, कि जुल्म होने लगे सरासर, सुनायें
 प्यारे फरियाद किसको जवां पें छाले पड़े हुए हैं॥

चर्खा से स्वराज

हमें ये स्वराज्य दिलाएगा चर्खा
 खिलाफत का भगड़ा मिटाएगा चर्खा
 ये घूँ घूँ की धुपद सुनाएगा चर्खा
 मेरे हौसले सब बढ़ाएगा चर्खा
 अगर हिन्द अपना चलायेगा चर्खा
 तो पल में हशर कर दिखाएगा चर्खा
 गन मशीनो के छक्के हुटाएगा चर्खा
 उदूँ के ज़िगर को जलाएगा चर्खा
 देशी मलमल व सखमल बनाएगा चर्खा
 दगाबजों को यहां से भगाएगा चर्खा
 स्वदेशी की जड़ को जमाएगा चर्खा

विदेशी तिजारत को खाएगा चर्खा
 पूरी शर्तें हमारी कराएगा चर्खा
 देश आजाद करके दिखाएगा चर्खा
 गुलामी का फंदा छुड़ाएगा चर्खा
 अजी जालिमों को रुलाएगा चर्खा
 जो 'प्यारे' भी अपना चलाएगा चर्खा
 तो दुश्मन को नीचा दिखाएगा चर्खा

अवश्य पढ़िए

अवश्य पढ़िए

अवश्य पढ़िए

लीजिये

रोज़गार

का

रोज़गार

✽ भारत का सुधार ✽

नोट—यदि आपको स्वतंत्र भारत से प्रेम है और जीवन शुफल बनाना चाहते हैं या लाभ उठाना चाहते हैं तो आप हमारे यहां के ट्रेकट मंगा कर लाभ उठावें और भारत स्वतंत्र बनावें ।

कांग्रेस विगुल

→)॥ उपदेशमाला हिन्दी उर्दू →)॥

कलयुग का फैशन

स्त्री सुधार

→)॥

देश सुधार

→)॥ सुराज्य का भंडा

स्वतंत्र भारत स्वदेशी भंडा →)॥

चर्खे की करामात →)॥

विधवा विलाप

→)॥

भारती भारत

→)॥

क्रांतिका सिंहनाद

महात्मा गांधी का अल्टीमेट